2 अगस्त 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

दृष्टि के पूर्णत: निर्भार हुये बिना अन्तर प्रवेश संभव नहीं है।

ह्न क्रमबद्ध पर्याय, पृष्ठ-33

वर्ष : 33, अंक : 9 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (प्रथम), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पर्यूषण पर्व में जीवहिंसा न करने के सुप्रीम कोर्ट के निर्णय का सार

सन् 1993 में गुजरात राज्य की तत्कालीन सरकार ने नगर निगम अहमदाबाद को पर्यूषण पर्व के 9 दिन श्वेताम्बर समाज के एवं 10 दिन दिगम्बर समाज के, कत्लखाने बंद रखने के निर्देश दिये। तदनुरूप निगम इसका परिपालन करता रहा। बाद में मिर्जापुर मोटी कुरेश जमात ने गुजरात हाई कोर्ट में इसके विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराया। उन्होंने तर्क दिया कि यह प्रतिबंध कसाई लोगों के व्यापार करने पर असर डालता है। व्यापार को नुकसान पहुँचानेवाला है, जिससे संविधान द्वारा प्रदत्त व्यापार करने के मूलभूत अधिकार को ठेस पहुँचती है।

गुजरात हाई कोर्ट ने उनके इस तर्क का समर्थन करते हुये सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाने के निर्णय को अनुचित बताते हुये रद्द कर दिया।

इसके बाद हिंसा विरोधक संघ आदि अहिंसा प्रेमी संस्थाओं ने गुजरात हाई कोर्ट के फैसले के विरुद्ध **सर्वोच्च न्यायालय में अपील** दायर की।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीशों ने सिविल अपील नं. 5469/2005 के अपने दिनाँक 14 मार्च 2008 के निर्णय में गुजरात हाईकोर्ट के निर्णय को रद्द करते हुये जैनधर्म के पर्यूषण पर्व/दसलक्षण पर्व में, उनकी भावनाओं को आदर देते हुये, कत्लखानों पर पूर्ण प्रतिबन्ध को उचित ठहराया।

यह प्रतिबंध का निर्णय अहिंसा प्रेमियों के लिये एक वरदान सिद्ध होगा एवं मूक जानवरों की जीवन रक्षा में सहायक होगा।

इस फैसले के आधार पर आप सभी अहिंसा प्रेमी अपने-अपने क्षेत्रों में कत्लखानों को इन दिनों में बन्द रखवाने का प्रयास करें।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय में बताया कि वर्ष के मात्र 19 दिनों में प्रतिबन्ध लगाने से संविधान का कहीं उल्लंघन नहीं होता। भारत एक मिली-जुली संस्कृति का देश है, जहाँ अलग-अलग धर्म को माननेवाले लोग रहते हैं। इसमें किसी समुदाय (जैन) की भावनाओं को आदर देते हुये 19 दिन के प्रतिबन्ध में कुछ भी अनुचित नहीं है। जैन समुदाय अहिंसा प्रेमी व जीवों के प्रति करुणाभाव रखता है; अत: यह उचित है।

सम्राट अकबर ने भी जैन समुदाय के लोगों व साधुओं के सम्पर्क में आने पर कुछ समय के लिये जीवों के मारने पर प्रतिबन्ध लगाया था। एक बार तो यह प्रतिबन्ध 6 माह तक रहा था। सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार जब अकबर द्वारा 6 माह के लिये प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है तो मात्र कुछ दिनों के लिये लगाया गया प्रतिबन्ध अनुचित नहीं है। इससे व्यापार करने के अधिकार को ठेस नहीं पहुंचती। यह प्रतिबन्ध समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में सहायक होगा।

ज्ञातव्य है कि यह फैसला आपको पर्व के दिनों में कत्लखाने, मांस बिक्री एवं अंडे के ठेले आदि को बन्द कराने में सहायक होगा।

ब्र. हेमचन्दजी 'विद्वत्रत्न' से विभूषित

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक 26 मई को अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद दिल्ली द्वारा **ब्र. हेमचंदजी 'हेम' भोपाल** को जैनधर्म के प्रचार-प्रसार की अनवरत सेवाओं के उपलक्ष्य में पण्डित प्रकाशचंद हितैषी पुरस्कार से सम्मानितकर **विद्वत् रत्न** की उपाधि से विभूषित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता विद्वत्परिषद के अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

इस अवसर पर डॉ.राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई ने ब्र.हेमचंदजी का विस्तृत परिचय दिया एवं कहा कि इंजीनियर होते हुये भी आपने मोक्षमार्गप्रकाशक एवं अन्य अनेक ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद और सम्पादन करके जैन आंग्ल साहित्य में वृद्धि की तथा प्रवचन, लेखन द्वारा निरंतर नि:स्वार्थ एवं निष्पक्षभाव से धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

समारोह में ब्र.यशपालजी ने तिलक लगाकर, डॉ.हुकमचंदजी संगवे सोलापुर ने माल्यार्पण करके, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा ने शॉल ओढाकर, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने 5 हजार रुपये की राशि भेंटकर एवं तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने प्रशस्ति-पत्र भेंटकर ब्र. हेमचंदजी हेम का सम्मान किया तथा उनकी धर्म सेवाओं का उल्लेख किया।

प्रशस्ति-पत्र का वाचन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

ब्र. हेमचंदजी हेम ने पुरस्कार को साभार स्वीकार करके पुरस्कार राशि वीतराग-विज्ञान (कन्नड़) के एक माह के अंक हेतु समर्पित की। उद्बोधन में अपने रोचक अनुभवों से अवगत कराते हुये धर्म के प्रचार-प्रसार, साहित्य एवं साधना की भावना व्यक्त की।

समारोह का संचालन एवं आभार प्रदर्शन डॉ. राजेन्द्रजी बंसल ने किया।

सम्पादकीय – 39

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ५९

विगत गाथा ५८ में कहा गया है कि कर्म बिना जीव के उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम भाव नहीं होते। इसलिए ये चारों भाव कर्मकृत हैं, कर्म निमित्तक हैं।

अब इस ५९वीं गाथा में यह कहते हैं कि निश्चय से आत्मा तो अपने भाव को छोड़कर अन्य कुछ भी नहीं करता।

मूल गाथा इसप्रकार है –

भावो जदि कम्म कदो, अत्ता कम्मस्स होदि किध कत्ता।
ण कुणदि अत्ता किंचि वि, मुत्ता अण्णं सगं भावं।।५९।।

(हरिगीत)

यदि कर्मकृत हैं जीव भाव तो कर्म ठहरे जीव कृत।
पर जीव तो कर्त्ता नहीं निज छोड़ किसी पर भाव का।।५९।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द उक्त गाथा में कहते हैं कि यदि जीव के भावकर्म द्रव्यकर्मकृत हों तो आत्मा भी द्रव्यकर्म का कर्त्ता ठहरे, जो संभव नहीं है; क्योंकि आत्मा तो अपने भाव को छोड़कर अन्य कुछ भी नहीं करता।

ध्यान रहे टीका में कर्म को जीवभाव का कर्तृत्व अर्थात् भावकर्मों का कर्त्ता होने के सम्बन्ध में यह पूर्वपक्ष है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र पूर्वपक्ष प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि यदि औदयिक आदि जीव के भाव द्रव्यकर्मों द्वारा किए जाते हों, तो जीव उन औदयिक आदि भावों का अर्थात् द्रव्यकर्मों का कर्त्ता नहीं है – ऐसा सिद्ध होता है और जीव का अकर्तृत्व तो इष्ट (मान्य) नहीं है। इसलिए जीव को तो द्रव्यकर्मों का कर्त्ता होना ही चाहिए; लेकिन ऐसा हो नहीं सकता; क्योंकि निश्चयनय से आत्मा अपने भावों के सिवाय अन्य कुछ भी नहीं करता।

इसप्रकार इस गाथा में पूर्वपक्ष उपस्थित किया गया है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

करम करै जो भाव कर्म कौं तौ जीव न करतार।
निज स्वभाव तजि और कछु, जीव न करै त्रिकार (ल)।।२९२।।

(सवैया इकतीसा)

औदयिक आदि जीव के स्वभाव कहै,
जौ तौ दरब कर्म रूप इनका करैया है।
तौ तौ भाव कर्म का करता जीव नाहि सूझै,
भाव का अकरतार लोक का फिरैया है।।
ऐसी सो बने नाहिं, भाव कर्म दुरै जाँहि,
तातै अपने भावौं का आप मैं बरैया है।
दर्व कर्म कौन कहौ और याकौ करै कौन,
आनमर्ता जीव पूछै पक्ष का धरैया है।।२९३।।

(दोहा)

गुरु कौ पूछे शिष्य इक, मिथ्यातमकरि वौन।
भाव करम यहु जीव का दरब कमरु कहौ कौन? ।।२९४।।

उक्त सम्पूर्ण काव्यों का सार यह है कि यदि द्रव्यकर्म ही भावकर्मों के कर्त्ता हैं तो जीव किसे करे? अर्थात् जीव अकर्त्ता ठहरेगा; क्योंकि जीव तो अपने स्वभाव के सिवाय अन्य कभी कुछ करता ही नहीं है। औदयिक आदि भावों को जो जीव का कहा सो उनका कर्त्ता तो पुद्गल द्रव्य है। यदि भावकर्म का कर्त्ता जीव नहीं है तो भावकर्म का अकर्त्ता लोक में परिभ्रमण क्यों करेगा ? नहीं करेगा। इसलिए जब तक जीव संसार में है, तब तक उसे भावकर्मों का कर्त्ता मानना उचित ही है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि द्रव्यकर्मों को भावकर्मों का सर्वथा कर्त्ता माना जावे तो आत्मा भावकर्मों का अकर्त्ता हो जायेगा तथा जड़कर्म के कारण विकार होगा तथा कर्म नष्ट हो तो धर्म हो – ऐसी कर्मों की अधीनता माने तो आत्मा अकर्त्ता हो। तथा द्रव्यकर्म में निमित्त कौन होगा? इसलिए कर्म के कारण राग–द्वेष नहीं होते; किन्तु अपने कारण ही होते हैं और द्रव्यकर्म उनमें निमित्त होते हैं – ऐसा जानना।

तात्पर्य यह है कि औदयिक आदि विकारी भावों का कर्त्ता रागी जीव ही कर्म नहीं। ●

गाथा– ६०

अब इस गाथा में जीव के रागादि भावों का निमित्त द्रव्यकर्म है, द्रव्यकर्म भावकर्मों के कारण होते हैं – ऐसा कहते हैं; परन्तु वास्तव में तो वे एक दूसरे के कर्त्ता हैं नहीं तथा कर्त्ता के बिना कर्म होते भी नहीं हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

भावो कम्मणिमित्तो कम्मं पुण भावकारणं हवदि।
ण दु तेसिं खलु कत्ता ण विणा भूदा दु कत्तारं।।६०।।

(हरिगीत)

कर्मनिमित्तिक भाव होते अर कर्म भावनिमित्त से।
अन्योन्य नहिं कर्ता तदपि, कर्ता बिना नहिं कर्म है।।६०।।

आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि जीवों के भावों का निमित्त कर्म हैं और कर्मों का निमित्त जीवभाव हैं; परन्तु वास्तव में वे एक दूसरे के कर्त्ता नहीं हैं। तथा कर्त्ता के बिना कर्म होते हों – ऐसा भी नहीं है। अर्थात् कर्त्ता

के बिना कर्म होते भी नहीं हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि इस गाथा में जो कहा गया है, वह गाथा ५९ में कहे पूर्वपक्ष के समाधानरूप सिद्धान्त है। वे कहते हैं कि व्यवहार से निमित्तमात्रपने के कारण औदयिक आदि भावकर्मों का कर्त्ता द्रव्यकर्म है तथा द्रव्यकर्म का कर्त्ता जीव का भाव है अर्थात् भावकर्म है। निश्चय से जीव भावों का अर्थात् रागादि भावकर्मों का कर्त्ता न तो द्रव्यकर्म है और न द्रव्यकर्मों का कर्त्ता भावकर्म है; क्योंकि निश्चय से जीव के परिणामों का कर्त्ता जीव है और द्रव्यकर्मों का कर्त्ता पुद्गल है।

कवि हीराचन्दजी उक्त कथन के भावों को अपनी काव्य की भाषा में अभिव्यक्ति देते हुए छन्द २९५ व २९६ में कहते हैं कि –

(दोहा)

भाव करमतैं होत है, करम भावतैं होइ।
लोकि सही करता नहीं, करता बिना न कोई।।२९५।।

(सवैया इकतीसा)

विवहार नय देखै कारन है दर्व कर्म–
रूप तातैं जीवभाव हेतु दर्वकर्म मान्या है।
नवा कर्मबन्धन है जीवभाव कारण तैं,
तातैं दर्वकर्म हेतु जीव भाव जान्या है।।
निहचै सरूप कोई करता काहू का नाहिं,
वस्तु का सरूप वस्तु माहिं पहिचान्या है।
जीवभाव जीव करै दर्वकर्म कर्म बरै,
ग्याता सुद्ध रूप जानि मिथ्या मोह भान्या है।।

(दोहा)

भाव करै सब दरब कौं, दरब करै सब भाव।
निमित्त निमित्त के भाव तैं, सोहे सकल कहाव।।२९७।।

व्यवहारनय से देखें तो द्रव्यकर्म कारण है तथा नये कर्मबंधन में जीवभाव अर्थात् भावकर्म कारण है। इसलिए द्रव्यकर्म का हेतु भावकर्म को माना है।

निश्चय से देखें तब तो कोई किसी का कर्त्ता नहीं है, वस्तु का स्वरूप स्वयं वस्तु से है।

जीव का भाव जीव स्वयं करता है और उनका निमित्त पाकर द्रव्यकर्म स्वयं अपनी योग्यता से बंधते हैं। ज्ञाता ने ऐसा शुद्ध स्वरूप समझकर मिथ्यात्व का नाश किया है।

कवि २९७वें दोहे में कहते हैं कि भावकर्मों से द्रव्यकर्म तथा द्रव्यकर्मों से भावकर्म बंधते हैं। दो द्रव्यों में ऐसा ही निमित्त–नैमित्तिक संबंध है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी उक्त गाथा के भावार्थ को इसप्रकार व्यक्त करते हैं कि निश्चय से जीवद्रव्य अपने चेतन भावकर्म–रागद्वेष विकार अथवा अविकारी भावों का कर्त्ता है तथा पुद्गलद्रव्य निश्चय से अपने द्रव्यकर्मरूप अवस्था का कर्त्ता है।

व्यवहारनय की अपेक्षा से देखें तो जीव द्रव्यकर्म की अवस्था का कर्त्ता है तथा द्रव्यकर्म जीव के विभावभाव का कर्त्ता है। यहाँ जो व्यवहार से कर्त्ता कहा, वह निमित्त बताने के लिए कहा है। जीव जब रागद्वेष करता है, तब रागद्वेष का निमित्त पाकर पुद्गलकर्म वहाँ स्वयं बंधते हैं – ऐसा बताने के लिए यह कहा है कि जीव ने कर्म बाँधे हैं तथा जब जीव राग–द्वेष करता है, तब कर्म का उदय होता है – यह बताने के लिए ऐसा कहा है कि कर्म के उदय से जीव में विभाव हुआ। कर्म में आत्मा के राग को निमित्त तथा आत्मा के राग में कर्म का निमित्त बताने के लिए ऐसा कथन किया है।

इसप्रकार उपादान–निमित्त कारण के भेद से जीव का कार्य व कर्मों का कार्य निश्चयनय व व्यवहारनय द्वारा होता है।

'जीव राग करता है' – यह कथन निश्चय का है और 'जीव भाषा बोलता है' – यह कथन व्यवहारनय का है। 'भाषा की पर्याय पुद्गल से होती हैं' – यह निश्चय वचन है तथा 'भाषा से ज्ञान होता है' – यह व्यवहार वचन है। 'स्वयं से ज्ञान होता है' – यह निश्चय है। 'एक दूसरे से एक दूसरे में कार्य होता है' – ऐसा मानना अज्ञान है। ●

गाथा– ६१

अब इस ६१वीं गाथा में कहते हैं कि अपने भाव को करता हुआ आत्मा पुद्गलकर्मों का कर्त्ता नहीं है। मूल गाथा इसप्रकार है –

कुव्वं सगं सहावं अत्ता कत्ता सगस्स भावस्स।
ण हि पोग्गलकम्माणं इदि जिणवयणं मुणेदव्वं।।६१।।

(हरिगीत)

निजभाव परिणत आत्मा कर्त्ता स्वयं के भाव का।
कर्त्ता न पुद्गल कर्म का यह कथन है जिनदेव का।।६१।।

आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि अपने स्वभाव को करता हुआ आत्मा वास्तव में अपने भाव का कर्त्ता है, पुद्गल कर्मों का कर्त्ता नहीं।

यहाँ अपने स्वभाव का कर्त्ता जो कहा, उसका अर्थ शुद्ध निश्चय से केवलज्ञानादि स्वभाव कर्त्ता समझना तथा अशुद्ध निश्चयनय से रागादि भावों को भी जीव का ही विभाव स्वभाव समझना।

आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि निश्चय से जीव को अपने भावों से अभिन्न कारक होने से जीव का ही कर्तृत्व है और पुद्गल कर्मों का अकर्तृत्व है – ऐसा समझना।

कवि हीरानन्दजी अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं कि –

(दोहा)

निज स्वभाव करता सता, जीव करै निजभाव।
पुद्गल करम करै नहीं, यहु जिनवचन लखाव।।२९८।।

(सवैया इकतीसा)

निहचै कै जीव एक अपना सुभाव करै,
शुद्ध अथवा अशुद्ध जग में सुछन्द है।
पर का स्वरूप तिहुँ कालविषै नाहिं चरै,
पर का करैया नाहिं चेतना का कन्द है।।
पर की पर छाँही कौं परै रूप करता है,
आपा–पर–भासमान आत्मा आनंद है।
केवल प्रतच्छ ज्ञानी शुद्ध आतमा कहानी,
जानी जिन जीव ताकौं वंदना अमंद है।।२९९।।

(दोहा)

सुद्ध–असुद्ध सुभाव का, जीव दरब करतार।
पुद्गल दरब करम करै, असद्भूत विवहार।।३००।।

कवि कहते हैं कि आत्मा अपने स्वभाव को करते हुए अपने निज स्वभाव का ही कर्त्ता है, पुद्गल कर्मों का कर्त्ता नहीं।

यद्यपि शुद्ध निश्चयनय से आत्मा अपने केवलज्ञानादि शुद्धस्वभावभावों का ही कर्त्ता है तथापि अशुद्धनिश्चयनय से रागादि अशुद्ध भावों का कर्त्ता भी कहा जाता है। आगे कहा है कि निश्चय से जीव अपने शुद्ध अथवा अशुद्ध स्वभाव को करते हुए जग में स्वछन्द रहता है; किन्तु पर का स्वरूप तो तीनकाल में कभी भी नहीं करता। आत्मा पर का कर्त्ता नहीं है, मात्र चेतना का कंद है, चेतनामय है। आत्मा पर की परछाई से पृथक् रहता हुआ अपने पराये के भेदज्ञानपूर्वक अपने आनन्द स्वभाव में मग्न रहता है। शुद्धात्मा के स्वरूप को एवं केवलज्ञान स्वभाव को जिसने जान लिया है, उनकी कवि वंदना करते हैं।

उक्त भावों को व्यक्त करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि यहाँ मूल गाथा में तथा जयसेनाचार्य की टीका में राग–द्वेष परिणामों को जीव का स्वभाव कहा है; क्योंकि आत्मा स्वयं स्वतंत्रपने उक्त राग–द्वेष के भावों को करता है। 'कर्म के कारण जीव विकार करता है' – यह तो निमित्त का कथन है। तथा जीव जितनी मात्रा में राग–द्वेष करता है, उतने प्रमाण में जड़कर्म बंधते हैं। ऐसा होते हुए भी जड़कर्म की अवस्था का कर्त्ता आत्मा नहीं है। जड़ की अवस्था तो जड़ के कारण होती है।

अज्ञानी ऐसा मानता है कि कर्म के कारण विकार होता है। उसकी यह मान्यता ठीक नहीं है, आत्मा तो त्रिकाल स्वतंत्र है। उसकी समय–समय होने वाली विकारी या अविकारी पर्यायें भी स्वतंत्र हैं। यदि एक पर्याय को पराधीन माना जावे तो द्रव्य भी पराधीन हो जायेगा। ऐसी दृष्टिवालों को कभी धर्म नहीं होता।

उक्त कथन में स्वामीजी ने जो राग–द्वेष के परिणामों को स्वभाव कहा है, वह एक तो संसारी जीव अपेक्षा से कहा है, दूसरे राग–द्वेष जीव को ही होते हैं, जड़ में नहीं। तीसरे विभाव स्वभाव को भी स्वभाव कहने का व्यवहार हैं। जैसे अमुक व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का है आदि। ●

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में दिनाँक 18 जुलाई को **अष्टाह्निका महापर्व : एक अनुशीलन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. दीपकजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में कनिष्ठ वर्ग में शास्त्री प्रथम वर्ष से रजतकांत जैन एवं वरिष्ठ वर्ग में शास्त्री द्वितीय वर्ष से अर्पित जैन चुने गये।

इसी अवसर पर **पंच परमेष्ठी : एक अनुशीलन** विषय पर प्राप्त श्रेष्ठ निबन्ध हेतु पुरस्कार मयंक जैन अमरमऊ को एवं कविता हेतु पुरस्कार अनेकांत जैन दलपतपुर को दिया गया।

अन्त में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने अध्यक्ष महोदय का आभार प्रदर्शन एवं शास्त्र भेंट किया। गोष्ठी का संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से भावेश जैन उदयपुर एवं दीपक जैन भिण्ड ने किया।

दिनाँक 25 जुलाई को **अनेकांत स्याद्वाद : एक अनुशीलन** विषय पर रविवारीय गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. जिनेन्द्रजी जैन लाडनूं ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग में ईर्या जैन एवं शास्त्री वर्ग में मयंक जैन अमरमऊ ने स्थान प्राप्त किया।

गोष्ठी का सफल संचालन विवेक शास्त्री मड़देवरा एवं जयेश रोकड़े शास्त्री अन्तिम वर्ष ने किया। इस प्रसंग पर **अष्टाह्निका महापर्व : एक अनुशीलन** विषय पर लिखित निबंध के लिये श्री अभय जैन बकस्वाहा को पुरस्कृत किया गया।

पाठ्य पुस्तकों में सुधार

सी.बी.एस.ई. कोर्स की छठवीं कक्षा की सामाजिक विज्ञान की पुस्तक में अभी तक भगवान महावीर को जैनधर्म का संस्थापक पढाया जाता था। उन्होंने बारह वर्ष भ्रमण किया और 72 वर्ष की आयु में मृत्यु हुई, ऐसी भ्रमपूर्ण और अयथार्थ जानकारी बच्चों को दी जाती थी।

डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल (संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री, अ.भा. दि. जैन परिषद) ने ऐसी भ्रामक जानकारी के संबंध में सप्रमाण आपत्ति उठायी और इस बात की पुष्टि की कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक नहीं हैं, यह प्राचीन धर्म है, भगवान महावीर इसके 24वें तीर्थङ्कर हैं, उन्होंने बारह वर्ष कठोर तपस्या और आत्मध्यान किया, जिससे वे परमात्मा बने। उनकी मृत्यु नहीं हुई अपितु निर्वाण हुआ। डॉ. बंसल ने इसके प्रमाण में इतिहास, धर्म, साहित्य आदि के अनेक बहुमूल्य प्रमाण प्रस्तुत किये। इन प्रमाणों से संतुष्ट होकर प्रधान संपादक हॉली फेथ, सी.बी.एस.ई. ने पुस्तकों में समुचित संशोधन किया। **ह्न सुभाषचन्द जैन**

पोस्टर का विमोचन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल द्वारा प्लास्टिक की थैलियों से हो रही पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा को देखते हुये एक पोस्टर जारी किया है, जिसका विमोचन श्रीमती कमलाक्षी शाह द्वारा कराया गया।

इस अवसर पर श्रीमती सुशीलाजी अलवरवालों ने बताया कि आज हम बाजार से सभी सामान प्लास्टिक की थैलियों में ही लाते हैं। इन्हीं थैलियों में घर की बची हुई बेकार साग–सब्जियाँ फैंक देते हैं। यहाँ–वहाँ सड़कों पर पड़ी हुई इन फल–सब्जियों की थैलियों को भोले प्राणी (गाय, कुत्ते आदि) खा जाते हैं, जो उनके गले व पेट में चिपक जाती है और वे तड़प–तड़पकर मर जाते हैं। यह दोष हमारे प्रमाद का ही है।

महिला मण्डल की मंत्री श्रीमती कमलाजी भारिल्ल ने बताया कि प्लास्टिक की थैलियों के प्रयोग से बचने के लिये हमने बहुत हल्की और सुन्दर थैलियां, बैग आदि बनवाये हैं। इनको घर–घर पहुंचाने का प्रयास भी कर रहे हैं। आप भी इनका उपयोग करें एवं औरों को भी बतावें। जो कोई भी इन थैलों को प्राप्त करना चाहते हैं, वे टोडरमल स्मारक से मात्र 10/– में प्राप्त कर सकते हैं। **– स्तुति जैन**

कल्पद्रुम मण्डल विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दि.जैन मंदिर मुशरफान जौहरी बाजार में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनाँक 18 से 25 जुलाई तक मुशरफ परिवार की ओर से कल्पद्रुम मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में पण्डित एकत्वजी शास्त्री एवं पण्डित दीपकजी शास्त्री ने संपन्न कराये। कार्यक्रम में श्री कमलचंदजी मुशरफ, श्री विजयकुमारजी सौगाणी एवं श्री अमित जैन का विशेष सहयोग मिला।

वीर शासन जयन्ती मनाई

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार चाकसू के चौक में स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 26 जुलाई को राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में वीर शासन जयन्ती पर्व मनाया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित बुद्धिप्रकाशजी भास्कर एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रासंगिक मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला।

कार्यक्रम का संचालन राजस्थान जैन सभा के मंत्री श्री कमलबाबू जैन ने किया। इस अवसर पर श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी सहित जयपुर जैन समाज के अनेक विशिष्ट महानुभाव उपस्थित थे **– सुरेश बज**

हार्दिक बधाई !

नागपुर निवासी श्री विश्वलोचनजी जैनी की सुपौत्री कु. श्रेया संदीप जैनी ने महाराष्ट्र बोर्ड दसवीं परीक्षा में शत्–प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं। इस उपलब्धि से नागपुर मुमुक्षु समाज गौरवान्वित है। हम श्रेया के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। **ह्न प्रबंध संपादक**

टोडरमल महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में पाँचों कक्षाओं का परीक्षा परिणाम निम्नानुसार रहा –

प्राक्शास्त्री प्रथम में 26 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 4 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। **प्राक्शास्त्री द्वितीय** में 18 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 5 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। **प्रथम वर्ष** में 22 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 5 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। **द्वितीय वर्ष** में 24 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी, 2 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी एवं 1 विद्यार्थी तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। **अन्तिम वर्ष** में 20 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 3 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में अध्ययनरत टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थी, जिन्होंने सत्र 2010–11 में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, वे निम्नानुसार हैं –

उपाध्याय कनिष्ठ में निलयकुमार जैन, उपाध्याय वरिष्ठ में कु. अनुभूति जैन, प्रथम वर्ष में श्रुति जैन दिल्ली, द्वितीय वर्ष में जयेश जैन उदयपुर एवं तृतीय वर्ष में चिंतामणी जैन औरंगाबाद ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

महाविद्यालय के इस श्रेष्ठ परिणाम हेतु जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

महिला मण्डल की मीटिंग संपन्न

मौ–भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक २२ जून को श्री त्रिशला महिला मण्डल की एक मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें महिला मण्डल द्वारा प्रतिमाह महिला मिलन समारोह के आयोजन का निर्णय लिया गया, जिसमें एक घण्टा महिला संगीत एवं एक घण्टा ज्ञानगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा।

इस अवसर पर ब्र.ज्योति दीदी ने सभी महिलाओं को एकजुट होकर प्रभावना के मंगल कार्य करने हेतु संकल्पबद्ध कराया।

इस आयोजन में आचार्य कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिर के प्राचार्य पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री द्वारा आयोजन को प्रतिमाह गतिमान रखने हेतु अनेक सुझाव एवं दिशा–निर्देश दिये गये।

संचालन सोनल जैन एवं मंगलाचरण प्रियंका जैन ने किया।

– शिल्पी जैन

पत्र सम्पादक संघ का सम्मेलन

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 8 अगस्त को अ.भा.जैन पत्र सम्पादक संघ का त्रिदिवसीय सम्मेलन तीर्थदर्शन एवं संत दर्शन के साथ इन्दौर, पुष्पगिरि एवं भोपाल में सम्पन्न होगा। सम्पादक संघ के महामंत्री श्री अखिल बंसल के अनुसार मध्यांचल महासमिति के तत्त्वावधान में आयोजित पत्रकार गोष्ठी में वर्तमान समय में लगातार बन रहे संगठनों का औचित्य विषय पर सम्पादकगण अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे।

दिनाँक 9 अगस्त को कार्यकारिणी की मीटिंग तथा सम्पादक संघ के विकास हेतु योजना तैयार की जावेगी।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

57 चौदहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की पीठिका में स्वाध्याय की महिमा का निरूपण करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''देखो ! शास्त्राभ्यास की महिमा ! जिसके होने पर जीव परम्परा से आत्मानुभव दशा को प्राप्त होता है, जिससे मोक्षरूप फल प्राप्त होता है। यह तो दूर ही रहो, शास्त्राभ्यास से तत्काल ही इतने गुण प्रगट होते हैं –

१. क्रोधादि कषायों की तो मंदता होती है।

२. पंचेन्द्रियों के विषयों में होनेवाली प्रवृत्ति रुकती है।

३. अति चंचल मन भी एकाग्र होता है।

४. हिंसादि पाँच पाप नहीं होते।

५. स्तोक (अल्प) ज्ञान होने पर भी त्रिलोक के तीन काल संबंधी चराचर पदार्थों का जानना होता है।

६. हेय-उपादेय की पहचान होती है।

७. आत्मज्ञान सन्मुख होता है।(ज्ञान आत्मसन्मुख होता है।)

८. अधिक-अधिक ज्ञान होने पर आनन्द उत्पन्न होता है।

९. लोक में महिमा/यश विशेष होता है।

१०. सातिशय पुण्य का बंध होता है।

इतने गुण तो शास्त्राभ्यास करने से तत्काल ही प्रगट होते हैं, इसलिए शास्त्राभ्यास अवश्य करना।[१]''

इसप्रकार हम देखते हैं कि पण्डितजी शास्त्र स्वाध्याय के माध्यम से तत्त्वनिर्णय करने पर बहुत जोर देते हैं। इस कलिकाल में एकमात्र जिनवाणी ही परमशरण है; क्योंकि सर्वज्ञ परमात्मा तो इस काल में यहाँ हैं ही नहीं; आत्मानुभवी गुरुओं की उपलब्धि भी सहज नहीं है।

यदि हमारे सद्भाग्य से ज्ञानीजनों का सत्समागम उपलब्ध भी हो जाय; तब भी वे हमें कितना समय दे पायेंगे; परन्तु जिनवाणी तो हमें सदा उपलब्ध है, सहज उपलब्ध है, यही कारण है कि प्रवचनसार में जिनवाणी को नित्यबोधक कहा है।

नित्यबोधक का भाव यह है कि वह आपको सदा उपलब्ध है। आप जब चाहें, तब पढ़ें; जहाँ चाहें, वहाँ पढ़ें। दिन में पढ़ें, रात में पढ़ें; मंदिर में पढ़ें, घर में पढ़ें, यात्रा में पढ़ें, बस में पढ़ें, रेल में पढ़ें, हवाई जहाज में पढ़ें, देश में पढ़ें, परदेश में पढ़ें, जहाँ भी संभव हो, जब भी समय मिले, तभी पढ़ें। अत: इस सुविधा का लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

१. सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका (पीठिका) पृष्ठ १५

प्रवचनसार के चरणानुयोगसूचक चूलिका में समागत मोक्षमार्ग प्रज्ञापन अधिकार में स्वाध्याय की उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

स्वाध्याय से अरुचि रखनेवालों को कम से कम उक्त प्रकरण का स्वाध्याय तो करना ही चाहिए। ●

पन्द्रहवाँ प्रवचन

मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अधिकार में समागत निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टियों की चर्चा चल रही है। यद्यपि विगत दो प्रवचनों में हम निश्चयाभासियों के स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं; तथापि अभी बात समाप्त नहीं हुई है।

ये निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि लोग जिनागम से अपरिचित लोग नहीं हैं। ये तो वे लोग हैं, जिन्होंने जिनागम का भरपूर स्वाध्याय किया है, परमागमरूप अध्यात्मशास्त्रों का भी स्वाध्याय किया है; फिर भी निश्चयनय के कथनों की सही अपेक्षाओं को न समझ पाने के कारण भ्रष्ट हो गये हैं, भटक गये हैं। इनका यह अज्ञान निश्चयनय के कथनों को आधार बनाकर प्रस्तुत हुआ है।

यह तो आप जानते ही हैं कि पण्डित टोडरमलजी ने इस मोक्षमार्ग-प्रकाशक ग्रंथ में अधिकांश आगमप्रमाण शंकाकार के मुख में रखे हैं।

जगत में अधिकांशत: तो ऐसा देखा जाता है कि प्रवक्ता या लेखक शंकाकारों का समाधान आगमप्रमाण प्रस्तुत करके करते हैं; पर यहाँ पण्डित टोडरमलजी का श्रोता या पाठक पढा-लिखा अध्ययनशील व्यक्ति है और जब कोई प्रश्न उपस्थित करता है, तो साथ में आगमप्रमाण भी प्रस्तुत करता है। उसकी कमजोरी मात्र यह है कि वह नयज्ञान में पारंगत नहीं है; अत: विभिन्न स्थानों पर प्राप्त होनेवाले नयकथनों की सही अपेक्षा नहीं समझ पाता।

आगम को आधार बनाकर प्रस्तुत की गई उसकी शंकाओं का समाधान पण्डितजी अपेक्षाओं को स्पष्ट करके करते हैं। आचार्य अमृतचंद्र भी समयसार की आत्मख्याति टीका में इसीप्रकार के प्रयोग करते हैं।

जब समयसार की २६वीं गाथा में शिष्य यह कहता है कि यदि तुम देह और आत्मा को एक नहीं मानोगे तो फिर आचार्यों द्वारा देह के आधार पर की गई तीर्थंकरों की स्तुति मिथ्या हो जावेगी; क्योंकि बड़े-बड़े आचार्यों द्वारा लिखे गये भक्तिकाव्यों में देह को आधार बनाकर स्तुति की गई है।

उसके उत्तर में आचार्य अमृतचंद्र सीधे यह कहते हैं –

''नैवं, नयविभागानभिज्ञोऽसि – ऐसा नहीं है, तुम नयविभाग से अनभिज्ञ हो, इसलिए ही ऐसी बात करते हो।

इसके बाद नयविभाग समझाकर वे अपनी बात को विस्तार से स्पष्ट करते हैं।

'पण्डित टोडरमलजी का श्रोता या पाठक ही अधिकांश आगम प्रमाण प्रस्तुत करता है' - इसका अर्थ यह नहीं है कि टोडरमलजी को आगम का अभ्यास नहीं था या उनके पास आगमप्रमाण नहीं थे।

अरे भाई ! श्रोता के मुख में रखे गये आगमप्रमाण भी तो उन्होंने ही प्रस्तुत किये हैं। मोक्षमार्गप्रकाशक का शंकाकार भी वे हैं और समाधान कर्ता भी वे ही हैं।

उन्हें जैनागम और अन्यमतों के शास्त्रों का गहरा अभ्यास था। अन्यमत समीक्षा और जैनागम की प्राचीनता के संदर्भ में वे आगमप्रमाणों की झड़ी लगा देते हैं। पाँचवें-छठवें अधिकार में प्रस्तुत जैन और जैनेतर आगमों के उद्धरणों को देखकर लोगों के पैरों के नीचे से जमीन खिसकने लगती है।

उस जमाने में न तो जैन व जैनेतर मतों के ग्रन्थों की उपलब्धि सहज थी और न हस्तलिखित होने से, मुद्रित न होने से, उनकी पृष्ठ संख्या ही दी जा सकती थी।

पण्डित टोडरमलजी ने न केवल जैन व जैनेतर ग्रन्थों का गंभीर अध्ययन किया था; अपितु उन्हें उनके महत्त्वपूर्ण अंश कण्ठस्थ थे।

पुराने जमाने में तो यह कहा जाता था कि **पुस्तक में स्थित ज्ञान और दूसरे के हाथ में गया हुआ धन समय पर काम नहीं आता। कण्ठ में स्थित विद्या और अपने हाथ में रखा हुआ धन ही समय पर काम आता है।**

जहाँ तक मुझे याद है, वह छन्द इसप्रकार है -

पुस्तकस्था या विद्या परहस्ते गतं धनम्।
प्राप्त आपत्तिकाले तु न सा विद्या न तद्धनम्।।

पुस्तक में स्थित विद्या और दूसरे के हाथ में गया हुआ धन; आपत्ति काल आने पर न वह विद्या विद्या है और न वह धन धन है।

हिन्दी में भी ऐसी लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि -

कंठ की विद्या अंट का दाम, समय पड़े पर आवे काम।

यही कारण है कि पण्डित टोडरमलजी ने जो भी उद्धरण प्रस्तुत किये हैं, वे लगभग सभी **'हनुमन्नाटक में कहा है कि'** इस भाषा में प्रस्तुत किये गये हैं। कहीं-कहीं **'कहा भी है'** मात्र इतना ही कहा है।

उस जमाने में संस्कृत साहित्य में **'उक्तं चं'** कहकर उद्धरण प्रस्तुत करने की पद्धति प्रचलित थी। इसप्रकार के कथन में यह कुछ भी नहीं बताया जाता है कि किसने कहा है और कहाँ कहा है।

प्रचलित कथनों के संदर्भ में ही ऐसा कहा जाता था। आज भी यह परम्परा पूर्णत: लुप्त नहीं हुई है। अत्यन्त लोकप्रिय और प्रसिद्ध कथनों के संदर्भ में इसप्रकार के प्रयोग होते देखे जाते हैं। जैसे हम कह देते हैं कि -

जे त्रिभुवन में जीव अनंत, सुख चाहें दुखतैं भयवन्त।

छहढाला में प्राप्त उक्त कथन से सभी मुमुक्षु भाई भलीभाँति परिचित हैं; अत: 'कहाँ कहा है, किसने कहा है' - यह बताने की आवश्यकता नहीं समझी जाती।

इसप्रकार हम देखते हैं कि पण्डित टोडरमलजी अलौकिक प्रतिभा के धनी तो थे ही, उनकी स्मरण शक्ति भी अद्भुत थी, अपार थी, अभिनंदनीय थी।

जो लोग पण्डित टोडरमलजी की आलोचना करते हैं, वे एक बार देखें तो सही कि वे उनके ज्ञान के सामने कितने बौने हैं ?

आज के समान उस जमाने में शास्त्रों की उपलब्धि सहज नहीं थी। आज तो लगभग सभी महत्त्वपूर्ण ग्रंथ अत्यल्प मूल्य में सर्वत्र उपलब्ध हैं; पर उस जमाने में उन्हें लिखवाना पड़ता था। शास्त्रों की प्रतिलिपि करना भी साधारण काम नहीं था; क्योंकि उसमें बार-बार सुधार करने की सुविधा नहीं रहती। लिखने वालों को भी संस्कृत-प्राकृत का जानकार होना चाहिए।

जो विशेषज्ञ विद्वान यह काम करते थे, उनकी आजीविका का एकमात्र यही साधन होता था; अत: उनका व उनके संपूर्ण परिवार का खर्च इसी पर अवलम्बित था। इसप्रकार एक-एक प्रति बेशकीमती होती थी।

सामान्य स्थिति के श्रावकों को अनेक शास्त्रों की प्रतियाँ उपलब्ध होना और उनके द्वारा उनका पढा जाना आसान काम न था।

वे सभी शास्त्र खुले पन्नों में ही होते थे। वेष्टन में आवेष्टित उन शास्त्रों को बार-बार खोलकर अपेक्षित आगम प्रमाणों की खोज करना आज जैसा आसान नहीं था। आज तो ग्रन्थ उठाया, सूची निकाली और फटाफट प्रमाण देख लिया। उस जमाने में तो ग्रन्थ के अध्ययनकाल में जो पढा; उसी के आधार पर प्रमाण (उद्धरण) दिये जाते थे।

मंदिरजी में सावधान मुद्रा में बैठकर उनका अध्ययन करना पड़ता था। ऐसी स्थिति में सबकुछ स्मृति के आधार पर ही करना पड़ता था।

पण्डित टोडरमलजी द्वारा दिये गये उद्धरणों से पता चलता है कि न केवल जैनदर्शन; अपितु अन्य दर्शनों के भी अनेकानेक ग्रंथों का गंभीर अध्ययन उन्हें था। उनके द्वारा दिये गये प्रश्नोत्तरों में, उनकी प्रबल तर्कशक्ति प्रतिबिम्बित होती है।

अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए वे अनेक उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं, जिसमें उनका लोकनिरीक्षण प्रतिबिम्बित हुआ है। उनके उदाहरणों में तत्कालीन सामाजिक स्थिति भी प्रतिबिम्बित हुई है। (क्रमश:)

2 अगस्त 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

अवश्य लाभ लेवें

1. श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थियों को एकजुट रखने, विचारों के आदान प्रदान करने, स्नातक विद्यार्थियों से संबंधित सूचनाओं को आपस में बांटने एवं स्मारक संबंधी सभी जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु एक वेबसाईट तैयार की गई है। इसे देखकर अपने विचार अवश्य व्यक्त करें। टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान एवं स्नातक विद्यार्थियों से अनुरोध है कि P.T.S.T. Sanchar का सदस्य अवश्य बनें।

www.ptstsanchar.blogspot.com

2. टोडरमल स्मारक में दोनों समय होने वाले प्रवचनों का लाइव प्रसारण इंटरनेट पर किया जा रहा है, जिसकी वेबसाईट निम्न है -

www.ustream.tv/channel/ptst/v3

इस वेबसाईट पर जो प्रवचन हो चुके हैं, उनको आप ऑनलाईन (online) देख सकते हैं और डाउनलोड (Download) भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें - Sudeep 2001@gmail.com

3. तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सभी वीडियो प्रवचनों को इंटरनेट पर Upload किया जा रहा है, जो निम्न वेबसाईट पर देख सकते हैं एवं डाउनलोड (Download) भी कर सकते हैं।

www.ustream.tv/channel/dr_hukamchand_bharill/v3

- सुदीप जैन

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की वेबसाईट प्रारंभ

संचार क्रांति के युग में सूचनाओं को तेज गति से सब तक पहुंचाने के लिये इन्टरनेट सबसे अच्छा साधन है। टोडरमल स्मारक ने भी इस आवश्यकता को महसूस करते हुये अपनी वेबसाइट नये/सुन्दर तरीके से बनाने का निर्णय किया है। यह वेबसाइट 15 अगस्त के लगभग प्रारंभ हो जायेगी।

टोडरमल स्मारक की वेबसाइट को देखने के लिये लॉग इन करें - www.ptst.in

मत्स्याखेट पर रोक की मांग

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 5 जुलाई को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के राजस्थान प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने झीलों से कुछ असामाजिक तत्त्वों द्वारा अवैधरूप से मछलियाँ पकड़ने पर रोक की मांग जिला कलेक्टर श्री आनंदकुमार से की।

श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री ने बताया कि पिछोला एवं शहर की अन्य झीलों से प्रतिदिन हजारों मछलियाँ अवैधरूप से पकड़ी जाती है, जबकि वर्षाकाल के दौरान मछलियाँ पकड़ने पर कानूनी रोक है, साथ ही मत्स्य विभाग ने भी विभिन्न जलाशयों में मछलियाँ पकड़ने पर रोक के आदेश जारी किये हैं।

टोडरमल स्मारक भवन स्थित

नवीनीकृत बाबूभाई सभागृह का उद्घाटन

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित बाबूभाई मेहता स्मृति सभागृह के नवीनीकरण का कार्य विगत 3 माह से चल रहा था, जो पूरा हो चुका है। इस सुन्दर सभागृह का उद्घाटन समारोह शनिवार, दिनाँक 31 जुलाई 2010 को आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन पीतल फैक्ट्री जयपुर ने की; हॉल का उद्घाटन श्री चन्द्रकांतभाई मेहता एवं दिलीपभाई शाह परिवार जयपुर ने किया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला। उद्घाटन के पूर्व श्री शांतिविधान का आयोजन भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया एवं मंगलाचरण कु.परिणति पाटील ने किया।

जैन भूगोल पर विशेष व्याख्यान

मुम्बई : यहाँ जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल द्वारा भारतीय विद्या भवन में दिनाँक 11 जुलाई को जैन भूगोल एवं विश्वदर्शन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा का उक्त विषय पर रोचक एवं सरल शैली में प्रमाण सहित, अत्यंत सारगर्भित, मार्मिक, तार्किक, आगमानुसार व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम में पण्डितजी की प्रवचन शैली से परिचित श्रोताओं की उपस्थिति भी आश्चर्यकारक थी; स्टडी सर्किल के विगत 25 वर्षों के एक दिवसीय कार्यक्रम के इतिहास में यह अत्यंत सफल कार्यक्रम रहा। पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने लगातार 3.5 घंटे तक प्रवचन किया, जिसका लगभग 600-700 लोगों ने लाभ लिया।

स्थानीय समाज ने भविष्य में भी पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों का लाभ लेने की भावना व्यक्त की।

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127